

भाकृअनुप-केन्द्रीय कपास अनुसंधान संस्थान, नागपुर

कपास की खेती के लिए ८ से १४ सप्टेंबर, २०१५ साप्ताहिक सलाह

(४३ वां मानक सप्ताह)

"सलाहकार संबंधित राज्यों के राज्य कृषि विश्वविद्यालयों से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर किया जाता है"

साप्ताहिक सलाह

राज्य/जिला	सप्टेंबर, २०१५ माह में वर्षा की स्थिति (मि.मी)							साप्ताहिक परामर्श
	8	9	10	11	12	13	14	
पंजाब								<p>सफेद मक्खी : इस समय सफेद मक्खी की संख्या कम है। अगले 3-4 सप्ताह में संख्या बढ़ सकती है। सफेद मक्खी की अचानक बड़ी संख्या में वृद्धि की रोकथाम के लिए किसान भाई सी.आई.सी.आर. की सिफारिशों को अपनाए। बादलो का गर्म तथा नम मौसम, संवेदनशील संकर, रौंदा तथा झाड़ीनुमा जिनप्रारूप देर से बुआई आदी कारण बड़ी संख्या वृद्धिके कारण हो सकते हैं। अधिक यूरिया तथा स्फुरद व पोटाश का कम अनुप्रयोग, एसिफेट, फिप्रेनिल तथा कीटनाशकों के मिश्रण पायरेथाईडो का अधिक बार छिड़काव, कीटनाशकों के प्रति प्रतिरोधकता निर्माण, खरपतवार, सफेदमक्खी की एकान्तर फसलों की लगातार खेती, सस्य क्रियाओं द्वारा नियंत्रण को न अपनाना तथा कीटनाशक छिड़काव की उचित विधि को न अपनाना आदि भी जिम्मेदार कारण हैं। इस किट के प्रबंधन के लिए प्रकृतिक किट नियंत्रण को नुकसान न पहुंचाते हुए उपरोक्त कीटनाशकों का प्रयोग न करें। यूरिया का अधिक प्रयोग न करें। उर्वरकों की खंडितमात्रा में नत्र:स्फुरद:पोटाश तीनों का प्रयोग करें। पीले रंग की चिपकने वाली ट्रेप एक ट्रेप प्रति 100 वर्ग मीटर की दर से फसल में लगाए। 15% निमतेल अथवा अरंडी तेल का नीरमा पावडर अथवा फिश ऑइल रोजीन सोप के साथ किट वृद्धि नियामक डाइफेथुरॉन, बुप्रोफेजीन, पायरोप्रोजीफेन, स्पीरोमेस्फीन तथा इमामेक्विन बैजोपट का छिड़काव अत्यधिक संख्या वृद्धि होने पर करें। इथिआन या ट्रायजोफास का मृदा अनुपयोग प्राथमिकता के आधार पर करें। छिड़काव सुबह अथवा दोपहर बाद फसल के मध्य व निचले भाग पर करें। इस समय पोटेशियम नाइट्रेट का 2 किग्रा प्रति एकड़ की दर से छिड़काव करने की सिफारिश की जाती है। लगभग सभी कपास उत्पादक क्षेत्रों में पत्ती मोड़क विषाणु का प्रकोप है। खेतों में लगभग सभी किस्मों/ संकरो पर रोग का प्रकोप है। हिसार, सिरसा, फतेहाबाद, जींद जिलों तथा बवानी खेरा तथा भिवानी ब्लॉको (भिवानी जिला) में पत्तीमोड़क विषाणु रोग का प्रकोप दर्ज किया गया है। इस रोग के वाहक किट सफेदमक्खी की संख्या वृद्धि को नियंत्रण में रखे और खेत को पोषकों से साफ- सुथरा रखें। किसानों को सलाह दी जाती है की अधिक उपज लेने के लिए फलन अवस्था में सिंचाई करे। पुष्पन प्रारंभ होने से लेकर एक सप्ताह के अंतराल में एन.पी.के. (13:0:45) का 2.0 किग्रा. प्रति एकड़ की दर से फसल पर छिड़काव करें। यह मौसम रोगों के प्रकोप के लिए भी अनुकूल होने कारण रोगों के प्रकोप पर नजर रखे। रिवाडी, पलवल तथा महेंद्रगढ़ जिलों के खेतों में जैसिड शिशु व प्रौढ़ संख्या आर्थिक हानी स्तर से अधिक रिपोर्ट की गई है। धान उत्पादक क्षेत्रों में भी यह संख्या आर्थिक हानी स्तर से अधिक पाई गयी है। देसी कपास में गूलर की सूँड़ी का प्रकोप देखा गया है। कूछ खेतों में <i>सोलेनोपसीस</i> मिलीबग का प्रकोप कहीं-कहीं देखा गया है। भटिंडा जिले में जीवाणु पत्ती गलन रोग देखा गया है। जैसिड संख्या (3-7 प्रति 3 पत्तियां),</p>
भटिंडा	0	0	0	0	0	0	0	
फिरोजपुर	0	0	0	0	0	0	0	
मुक्तसर	0	0	0	0	0	0	0	
मानसा	0	0	0	0	0	0	0	
हरियाणा								
सिरसा	0	0	0	0	0	0	0	
हिसार	0	0	0	0	0	0	0	
फतेहाबाद	0	0	0	0	0	0	0	
राजस्थान								
हनुमानगढ़	0	0	0	0	0	0	0	
श्रीगंगानगर	0	0	0	0	0	0	0	
बांसवाड़ा	0	7	0	0	3	0	0	

								सफेदमकखी (9-22 प्रति 3 पतियां) तथा फुलकिट (2-11 प्रति 3 पतियां) दर्ज की गई। सिंचाई देने के बाद कई स्थानों में आकस्मिक मूरझान रोग देखा गया है। यद्यपि जैसिड की संख्या बढ़ रही है लेकिन अभी काबू पाने के लिए कोबाल्ट क्लोराइड 10 पीपीएम (एक ग्राम प्रति 100 ली. पानी) की दर से छिड़काव करें। फिलहाल वर्षा होने की संभावना नहीं है।
उड़ीसा								अक्टूबर के पहले सप्ताह तक वर्षा जारी रहने की संभावना है। फसल पुष्पन तथा गूलर विकास अवस्था में 70 से 79 दिनों की है। जैसिड (1-3 शिशु / 3 पतिया) तथा सफेद मकखी (18-78/ 3 पतियां) की संख्या आर्थिक हानी सीमा से अधिक है। फुलकीट संख्या 6-24/3 पतियां दर्ज की गई। चित्तीदार सूँड़ी की संख्या भी कहीं-कहीं नगण्य देखी गई। अरियास प्रजाति चित्तीदार सूँड़ी की संख्या देसी तथा अमेरिकन कपास पर 6-18 सूँड़ी/20 पौधे पाई गई। गुलाबी सूँड़ी पतंग 2-5 प्रति फिरोमोन ट्रेप दर्ज किए गए। सभी प्रकार के खरपतवारों का फसल में प्रकोप रहा जिनकी रोकथाम की गई। चेपा (एसिड) जैसिड, अर्धकुण्डलक इल्ली व टिड्डों की संख्या आर्थिक हानी स्तर से नीचे रही। किसी रोग का प्रकोप फसल पर नहीं पाया गया। अमेरिकन सूँड़ी तथा <i>स्पोडोप्टेरा</i> पर नजर रखने के लिए प्रति हे. 5 फिरोमोन ट्रेप फसल में लगाए।
गुजरात								गुजरात के कुछ हिस्सों में रुक-रुक कर वर्षा होने की संभावना है। 17-20 सितंबर के मध्य अंतिम वर्षा होने के आसार हैं जिसके बाद वर्षा नहीं होगी। फसल लघुकली तथा पुष्पन अवस्था में है। जैसिड सफेदमकखी मिलीबग तथा फुलकीट संख्या आर्थिक हानी स्तर से कम पाई गई। फसल की स्थिति अच्छी है। यूरिया के अधिक प्रयोग से बचे। किसान भाई पाइरेथाइड तथा फिप्रोनिल का छिड़काव बिल्कुल न करें। स्पीनोसेड तथा थायोडिकार्ब का बार-बार छिड़काव करने से क्रमशः मिलीबग तथा लालपती रोग की समस्या बढ़ सकती है। फसल पर कोई रोग नहीं है।
अमरेली	4	7	7	6	0	7	0	गुलाबी सूँड़ी: बी.टी. कपास में गुलाबी सूँड़ी का प्रकोप बहुत कम है। इस सूँड़ी पर नजर रखने के लिए किसान भाई फीरोमोन ट्रेप 5-6 प्रति हेक्टर की संख्या में फसल में लगाएँ। पतंगों की संख्या 8 प्रति ट्रेप/रात्री लगातार तीन रातों में आने पर अथवा इस सूँड़ी द्वारा 10% गुलरों में नुकसान होने पर क्वीनालफास का छिड़काव करें। फसल को दिसंबर तक ही समाप्त करने की सलाह दी जाती है। गुलाबी सूँड़ी का प्रकोप कम करना तथा बी.टी. कपास में इनके लिए प्रतिरोधकता निर्माण को रोकना आवश्यक है। पिछले वर्ष की खेत की मेढ़ों पर जमा सूखी लकड़ियों को तुरंत नष्ट करें। भण्डारण में रखे या घरों में कपास के पुराना बीज गुलाबी सूँड़ी के पतंगों का स्रोत होता है। अतः पुराने बीज को भी नष्ट करें। यदि ये सावधानी नहीं बरती गई तो अक्टूबर-नवंबर में ही इस सूँड़ी का भारी नुकसान प्रारंभ हो सकता है। कीटनाशकों का मिश्रण विशेषतः पाइरेथाइड सहित का प्रयोग ना करें। इससे सफेदमकखी की समस्या बढ़ सकती है।
भावनगर	0	3	4	6	0	7	0	
जामनगर	0	0	0	0	0	0	0	
राजकोट	0	0	0	0	0	0	0	
भरूच	14	21	15	4	4	0	1	
सबरकांठा	0	0	3	5	0	0		
सुरेन्द्रनगर	3	0	0	3	8	0	0	
अहमदाबाद	0	3	4	6	8	7	1	
वडोदरा	0	16	11	0	7	9	2	
पाटन	0	0	0	3	5	0	2	
मेहसाना	0	0	0	3	5	0	0	
मध्यप्रदेश								
खरगोन	0	0	0	3	4	5	0	फसल की स्थिति अच्छी है। ग्रीष्मकालीन फसल फलन अवस्था में जब की पिछेती फसल वानस्पतिक अवस्था में है। मौसम शुष्क तथा अधिक तापमान रहेगा। राज्य के कुछ हिस्सों में कुछ संकरों में जैसिड संख्या आर्थिक हानि सीमा से अधिक है। इन खेतों में सिफारिश किए गए नियंत्रण उपाय अपनाएँ। किसी भी रोग का प्रकोप फसल पर नहीं है। सितंबर के तीसरे सप्ताह में वर्षा होने की संभावना है। इसके बाद अंतिम वर्षा अक्टूबर के पहले सप्ताह में होगी।
धार	0	0	0	0	0	0	0	
खंडवा	0	0	0	0	3	3	0	
महाराष्ट्र								
नागपुर	4	3	0	0	0	0	4	विदर्भ में फसल गूलर निर्माण अवस्था में है। पिछेती फसल यानी मध्य जून में बोई गई फसल पुष्पन अवस्था में और जुलाई में बुआई की गई फसल
वर्धा	4	0	3	0	0	0	15	

चंद्रपुर	12	10	3	9	0	0	2	वानस्पतिक अवस्था में है। जुलाई में बोई गई फसल में अंतिम निराई-गुड़ाई करें। कुछ स्थानों पर मिलीबाग और सफेदमक्खी का प्रकोप देखा गया है। कुछ स्थानों पर एल्टरनेरिया रोग भी देखा गया है। पुष्पन अवस्था की फसल में 2% यूरिया अथवा डीएपी का छिड़काव तथा गूलर विकास अवस्था की फसल पर 1.0% यूरिया तथा 1.0% मेग्नीशियम सल्फेट का छिड़काव करने की किसान भाइयों को सलाह दी जाती है। मध्य महाराष्ट्र में अच्छी वर्षा होने की संभावना है। महाराष्ट्र के सभी कपास उत्पादन क्षेत्रों में 17-24 सितंबर के मध्य अच्छी वर्षा होगी तथा 30 सितंबर से 4 अक्टूबर के मध्य अंतिम वर्षा होने की संभावना है। इस वर्षा का कपास की फसल को लाभ मिलेगा। क्राप-सेप नाशीकीटनिगरानी रिपोर्ट: अकोला में 57.64% गावों में , जालना (42.93%), चंद्रपुर (39.47%) तथा हिंगोली जिले के 28.73% गावों में सर्वेक्षण किया गया जहाँ जैसिड संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई। अमरावती के 15.49%, उस्मानाबाद के 15.78%, नागपुर के 13.47% तथा गडचिरोली के 18.18% गावों में कीट सर्वेक्षण किया गया जिसमें 10% से अधिक गावों में जैसिड का प्रकोप आर्थिक हानि स्तर से अधिक पाया गया। जालना जिले के 12.39% गावों में फुलकीट की संख्या आर्थिक हानि स्तर से अधिक दर्ज की गई है। लाल पत्ती रोग अहमदनगर में (33.73%प्रभावित गांव), इसके बाद नागपुर (5.80%), औरंगाबाद (4.34%) तथा जलगांव (2.85%) में रिकार्ड किया गया।
यवतमाल	3	0	6	0	0	3	19	
अमरावती	4	0	3	0	3	0	12	
अकोला	0	0	4	3	3	4	0	
बुलढाना	0	0	6	7	6	13	0	
परभणी	11	5	7	21	13	12	4	
नांदेड़	41	15	11	23	10	11	0	
बीड़	20	4	8	18	14	11	0	
वासिम	0	3	8	3	3	4	2	
धुले	0	0	3	10	10	14	0	
जलगांव	0	0	0	10	10	14	0	
जालना	6	0	6	9	10	13	0	
औरंगाबाद	3	0	4	12	11	10	0	
तेलंगाना								तेलंगाना तथा आंध्र प्रदेश के कपास उत्पादक जिलों में सितंबर तथा अक्टूबर के पहले सप्ताह तक सतत वर्षा होने की संभावना है। फसल वानस्पतिक से लघुकली निर्माण अवस्था में है। मेग्नीशियम सल्फेट के साथ नत्र तथा पोटाश उर्वरकों की पहली, दूसरी खंडित मात्रा दी जा सकती है। अंतःशस्म क्रियाएँ समय पर निपटाएँ। छोटे अंतराल पर लगातार वर्षा होते रहने की स्थिति में कुछ चुने हुए खरपतवारनाशकों का अंकुरण पश्चात अनुप्रयोग आवश्यक हो सकता है। सफेदमक्खी की संख्या को बढ़ने से रोकने के लिए एसीफेट व फिप्रोनिल का छिड़काव न करें। शीर्ष वानस्पतिक तथा पूर्व-मध्य फलन अवस्था में लगातार वर्षा होने की स्थिति में किसी भी कीटनाशक का छिड़काव करने की आवश्यकता नहीं है। लगातार वर्षा की संभावना को देखते हुए किसान भाई खेत से पानी निकास की उपाय योजना करें। खेत में नाली बनाई जा सकती है। यूरिया 2% अथवा पोटेशियम नाइट्रेट 2% का फसल पर छिड़काव किया जा सकता है। यूरिया 25 किग्रा. के साथ म्यूरेट ऑफ पोटाश 15 किग्रा. प्रति एकड़ की अतिरिक्त मात्रा का अनुप्रयोग किया जा सकता है। क्षेत्र के किसी भी हिस्से से नाशीकीट अथवा रोगों का प्रकोप दर्ज नहीं किया गया है।
आदिलाबाद	73	33	18	23	11	13	8	
कारिंगर	15	33	18	23	20	13	5	
खम्मन	21	13	12	24	35	18	11	
करीमनगर	21	33	12	17	20	13	5	
नालगोंडा	20	19	14	24	35	16	6	
आंध्रप्रदेश								
गुन्टूर	14	13	15	31	45	16	20	
प्रकासम	15	17	30	36	45	23		
कर्नाटक								
धारवाड़	13	10	7	0	27	30	5	
हवैरी	15	20	11	0	11	20	2	
मैसूर	60	67	64	7	20	8	0	
तमिलनाडू								इस सप्ताह में वर्षा की संभावना के साथ बादलों का मौसम बना रहेगा। रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। पेंडीमेथलीन अंकुरण-पूर्व खरपतवारनाशक का 3.3 ग्रा./किग्रा. बीज दर से अथवा <i>ट्राइकोडर्मा विरिडी</i> 4 ग्रा./ किग्रा. बीज
पेरंबलुर	5	0	9	6	0	0	0	
सेलम	21	9	70	10	8	12	1	

त्रिची	10	4	14	7	0	0	0	दर से बीजोपचार करें। छोटे पौधों पर चेंपा (एफीड) तथा पत्ती सुरंगक कीट के नुकसान के लिए कोई उपाय न करें। <i>ट्रायथेमा पोर्टुलाकेस्ट्रम</i> , <i>पार्थेनियम सायनोडन डेक्टाइलोन</i> के नियंत्रण के लिए सिफारिश किए गए उपाय करें।
विरडुनगर	13	16	24	19	10	9	0	
आदर्श वर्षा	< 5	5-20	20-50	50-80	> 80			
वर्षा मि.मी								

उत्तर भारत:

- फसल अंकुरण चरण (स्टेपलिंग स्टेज) में है।
- इस ऋतु वर्ष के लिए “सी आई सी आर और राज्य कृषि विश्वविद्यालयों” द्वारा सिफारिश की गई कपास की जल्दी परिपक्वहोने वाली बीटी संकर या अगतीकिस्मे पर्ण कुंचन रोग (लीफ कर्ल वायरस रोग) के लिए प्रतिरोधी थे इस वर्ष के लिए भी उन्ही किस्मों की सिफारिस की जाती है।
- कपास की देसी किस्मे पर्ण कुंचन रोग के लिए प्रतिरोधी हैं अतः उत्तर भारत के लिए देसी उन्हीं को किस्मों की जोरदार सिफारिस की जाती है।
- फसल के अवशेषों और आकार में समानकपास के पौधों को नष्ट कर दिया जाना चाहिए।
- किसान को खरपतवार एवं इतसितके प्रबंधन करने की सलाह दी जाती है।
- थ्रिप्स कीटों का संक्रमण अंकुर स्तर (सीडलिंग स्टेज) पर हो सकता है, लेकिन शायद ही वे कभी आर्थिक नुकसानदेय होते हैं चूसक कीट(थ्रिप्स) के संक्रमण की नियमित निगरानी किया जाना चाहिए।
- अनावश्यक कीटनाशक स्प्रे करने से बचें।

मध्य और दक्षिण भारत:

- गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और उड़ीसा के लिए 15 से 25 जून के बीच इस सीजन में बुवाई आदर्श
- दक्षिण भारत में बुवाई जुलाई से आगे नहीं बढ़ाया जाना चाहिए 15
- वर्षा आधारित क्षेत्रों विशेष रूप (बोरानी) से में उच्च घनत्व रोपण प्रणालियों में लकीरें पर बुवाई सबसे अच्छा माना गया है।
- वर्षा सिंचित क्षेत्रों में, बुआई 8 से 10 से. मी. वर्षा के बाद किया जाना चाहिए।
- बीटी कपास की संकर किस्मों को या जल्दी परिपक्व वाली किस्मों को प्राथमिकता देना चाहिए।
- वर्षा आधारित क्षेत्रों में संकर बीटी कपास 90 x 10 से. मी. दूरी पर बोना चाहिए है। इन किस्मों को उच्च घनत्व रोपण प्रणाली में
- गैर बीटी किस्मों-जैसे एके सूरज (सीईसीआर), एनएच 615 (वीएन-एमएयू) परभणी, एकेएच 081 (डॉ. पीडीकेव्ही अकोला), फुले धन्वन्तरी (एमपीकेव्ही राहुरी) जल्दी परिपक्व होते हैं। इसे जून 15 से पहले बोया जाता है तो फसल बालीवर्म एवं सूखा तनाव से बच जाएगा।
- कपासकेगैर बीटी किस्मों को उच्च घनत्व प्रणाली का उपयोग कर ब्राडयरीजोबियम जेपोनिकम से उपचरित करके सोयाबीन के बीज या लोबिया और कालाचना के साथ 45 सेमीपंक्ति से पंक्ति दूरी तथा पौधे से सेमीदूरी।

- एक पर एक के बाद 10 पंक्ति पर अंतरफसल के रूप में भी लगाया जा सकता है।
- कपास के बीटी किस्मों को उच्च घनत्व प्रणाली का उपयोग कर ब्राडयोरिजोबियम जेपोनिकम से उपचरित सोयाबीन के बीज या लोबिया और कालाचना की एक पंक्ति और कपास दो पंक्ति के साथ अंतरफसल के रूप में भी लगाया जा सकता है।
- कपास के खेतों की सीमा में या आसपास अरहर की 2-3 पंक्तियाँ रिफ्रयुजिया के रूप में सेवा करते हैं।
- वीडिसाइड स्टोम्प 30 ईसी या बेसलीन 45ईसी 2.5 lit/ हेक्टर के उपयोग खरपतवार के पूर्व उद्भवरोकने के लिए किया गया हो तो तुरंत हैरो करने से यह छिड़काव प्रभावी रहता है।
- पहली बारिश के बाद खेत खाद (फार्म यार्ड मैन्योर) या गोबर खाद 5 से 10 टन प्रति हेक्टर खेतों में डालना चाहिए।
- एजोटोबेक्टर और पीएसबी दोनों का 25 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज में इस्तेमाल पोषकत्वों के स्थिरीकरण के लिए किया जाना चाहिए।
- इमिडाक्लोप्रिड (8 ग्रा.), विटावेक्स या थिरम (3 ग्राम.) प्रति किलोग्राम बीज चूसक कीट एवं रोगों के खिलाफ कपास की किस्मों की रक्षा करेगा।

भाकृअनुप-सीआईसीआर द्वारा सिफारिस की गयी प्रबंधन रणनीतियाँ:

नाशीकीट प्रबंधन

सामान्य सिफारिशें

ये करें:

- रसचूसक कीटों के लिए प्रतिरोधी किस्मों/संकरों का चुनाव करें। रसचूसक कीटों के लिए प्रतिरोधी बीटी संकरों पर कीटनाशकों के बहुत कम छिड़कावों की आवश्यकता होती है।
- रसचूसक कीटों के भक्षक कीटों को बढ़ावा देने के लिए लोबिया या ज्वार या उड़द या सायाबीन की अंतः फसल लें।
- इमिडेक्लोप्रिड @ 7 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज से बीजोंपचार करें।
- विशेषतः रसचूसक कीटों के लिए सवेदन किस्मों में नाइट्रोजन युक्त उर्वरकों का न्यूनतम उपयोग।
- फसल को खरपतवारों से मुक्त रखें और मिलिबग से ग्रस्त पौधों को धीरे-से उखाड़ कर नष्ट कर दें।
- बुवाई के 30-40 दिनों व 50-60 दिनों बाद फूलकीट, मिरीड बग और दूसरे रस चूसक कीटों के पर्यावरण हितैषी नियंत्रण के लिए इमिडेक्लोप्रिड, डाइमेटोएट या एसिफेट का पौधों के तने पर या पौधों के तने पास मिट्टी में अनुप्रयोग।

ये ना करें:

- फसल के पहले दो महीनों में मित्र कीटों के संरक्षण के लिए रासायनिक कीटनाशकों के छिड़काव को यथा संभव टालें। नैसर्गिक रूप से पाये जाने वाले लाभदायक कीट लेडी बर्ड बीटल, क्रायसोपर्ला, जीकोरिस बग, एफिलिनस उनके शिशु व प्रौढ़, सरफीड मक्खी, मिरीड बग, मकड़ियों आदि का संरक्षण होता है। ये मित्र कीट चेंपा, जेसिड, फूलकीट, मिरीड, सफेद मक्खी तथा मिली बग का कारगर तरीके से नियंत्रण करते हैं।

- लेपिडोप्टेरा आडर के कम हानिकारक नाशिकीटों जैसे पत्ती लपेटक साइलेप्टा डेरोगेटा व अर्धकुंडलक एनोमिस फलेवा के लिए फसल पर छिड़काव न करें। इन कीटों की इल्लियां कपास को बहुत कम नुकसान पहुंचाती हैं लेकिन ट्रायकोग्रामा प्रजाति, सिसिरोपा फोरमोसा, एपेंटेलेस प्रजाति जैसे परजीवियों के लिए परपोषी का काम करते हैं।
- भविष्य में चयन दबाव से बचने के लिए बीटी कपास पर बीटी कीटनाशक का छिड़काव ना करें।
- एसिटामीप्रिड, इमिडेक्लोप्रिड, क्लोथिएनिडिन व थायोमेथोक्शाम जैसे निओनिकोटीनाइड समूह के कीटनाशकों का फसल पर छिड़काव करने से बचें।
- डब्ल्यूएचओ वर्ग-1 श्रेणी (अति हानिकारक श्रेणी) के कीटनाशकों जैसे फोसफेमिडान, मिथाइल पैराथिओन फोरेट, मोनोक्रोटोफास, डाइक्लोरवास, कार्बोफ्यूरान, मिथोमिल, ट्रिजोफोस, तथा मेटासिस्टोक्स का अनुप्रयोग ना करें।
- सफेद मक्खी के महाप्रकोप से बचने के लिए फिप्रोनिल तथा पायरेथ्रोइड जैसे कीटनाशकों के छिड़काव से बचें।

रसचूसक कीटों का प्रबंधन:

आर्थिक हानि सीमा (ईटीएल): यदि सफेद मक्खी तथा जेसिड की हानि का स्तर आर्थिक हानि सीमा ग्रेड अर्थात निचली पतियों के मुड़ने और सिकुड़ने तथा किनारों से पीले पड़ना आदि 25% या अधिक पौधों में दिखाई दे तो नीचे दिये गए नियंत्रण उपाय अपनाए:

- अ) नीम तेल 1.0 % + नीबोलीगिरी 5.0% + 0.05-0.1 डिटर्जेंट ।
- आ) वर्टीसीलियम लेकानी @ 10 ग्राम/ प्रति लीटर पानी; अच्छे सूत्रण विश्वसनीय निर्माताओं से ही खरीदें।
- इ) डाइफेन्थियूरोन (50 % 800 ग्राम / हे.)
- ई) फ्लोनिकोमिड 50% 200 ग्राम / हे. या
- उ) बुप्रोफेजीन 25% 200 ग्राम/ हे

पर्यावरण सुरक्षा, पारिस्थितिकी प्रभावकारिता और प्रतिरोध से संबंधित कारकों को ध्यान में रखते हुए कीटनाशक जैसे डाइमैथोएट या एसिफेट या इथिओन का भी इस्तेमाल सिर्फ विकल्प के रूप में किया जा सकता है।

यदि कलियों (स्क्वेयर) को मिरीड बग के प्रकोप का आर्थिक नुकसान दिखाई दे तो एसिफेट 75 एसपी या डाइमैथोएट @ एक ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।

गूलर की सूंडियों का प्रबंधन:

गूलर की सूंडियों की नियन्त्रण करने में बीटी कपास प्रभावी है।

गैर बीटी कपास के लिए निम्न रणनीति की सिफारिस की जा रही है: अमेरिकन सूंडी (हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा) द्वारा 50% पौधों पर कलियाँ ग्रस्त होने पर इस आर्थिक हानि स्तर पर निम्न उपाय करें:

- 1) बीटी कपास के फसल पर एचएएनपीबी (HaNPB) का छिड़काव करें, इसके एक सप्ताह बाद 5% निबोली गिरी का छिड़काव करें या गूलर की सूंडियों स्पोंडोप्टेरा (तम्बाखू की इल्ली) या सफेद मक्खी के नियन्त्रण के लिए आर्थिक हानि स्तर पर फोसलोन कीटनाशक का प्रयोग करें।

- 2) बुवाई के 70-80 दिनों बाद बीटी रहित कपास पर उपलब्ध होने पर ट्रायकोग्रामा का प्रयोग करें।
- 3) गूलर की सूंडियों, विशेष रूप से, हेलिकोवर्पा आर्मिजेरा नियन्त्रण के लिए प्रभावी कीटनाशक निम्न है:

- क) क्लोरेनट्रेनिलीप्रोल (कोरजेन)
- ख) फ्लुबेनडाइमाइड (फेम)
- ग) स्पीनोसेड
- घ) इमामेक्टीन बेंजोएट तथा
- ड) इंडोक्साकार्ब

ये कीटनाशक लक्षित नाशीकीटों के लिए चयनित अति विषैले हैं जबकि कपास पारिस्थिकीतंत्र में लाभदायक कीटों के लिए कम विषैले हैं। ये कीटनाशक पर्यावरण हितैषी कीटनाशक प्रतिरोधिता प्रबंधन कार्यक्रम के लिए उपयुक्त हैं।

- 4) गुलाबी सूंडी और चित्तिदार सूंडी : इनके लिए आर्थिक हानि सीमा है - 10 हरे गुलरों में एक जीवित सूंडी मिलने पर या लगातार तीन रातों में 8 पतंग (किट) प्रति ट्रेप प्रति रात पकड़ में आने पर; क्विनोलाफास 25 इसी या का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर से या थायोडिकार्ब 75 डब्लू पी (WP) का या कोई पाइरेथ्रोइड का फसल पर छिड़काव करें।
- 5) स्पोडोप्टेरा लिटुरा: इस इल्ले के अंड पुंजों को हाथ से एकत्र करें या एसएनपीवी का 500 एल ई/हे. अथवा रिमोन 10 एल ई का 200 मिली अथवा लार्विन 75 डब्लू पी 250 ग्राम पाउडर 250 लीटर पानी प्रति एकड़ छिड़काव करें।
- 6) प्ररोह घुन के नुकसान को कम करने के लिए प्रोफेनोफास 50 ई सी का 2 मिली प्रति लीटर पानी की दर एसआर फसल पर छिड़काव करें।
- 7) अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में घोंघे का प्रकोप: प्रलोभक मेटेल्डीहाइड 2% (स्नेल किल) 12.5 कि. ग्रा./हे. की दर से घोंघों के छिपने की जगह पर प्रयोग करें, मेढों फसल के चारों ओर उन जगहों पर डालें जहां इनका नुकसान दिखायी दे।

रोग प्रबंधन:

नवीन मुरझान (पैराविल्ट) मुरझान/जड़ गलन:

कुछ खेतों में सूखा के बाद वर्षा होने या सिचाई करने पर इसके लक्षण फसल में दिखायी देते हैं। प्रभावित पौधों पर मुरझान के लक्षण दिखायी देने के कुछ घंटों में ही कोबाल्ट क्लोराइड 10 मि. ग्रा. प्रति लीटर पानी की दर (पीपीएम) से छिड़काव करें या प्रभावित पौधों की जड़ों में कापर-आक्सी-क्लोराइड 25 ग्रा. तथा यूरिया 200 ग्राम या कार्बोडेजिम 1 ग्रा./लीटर की दर से 10 लीटर पानी लेकर मिट्टी को तर करें।

गूलर सड़न: साधारणतः प्रारम्भिक विकसित पौधे के निचले हिस्से के गूलर बादलों के मौसम या लगातार रिमझिम बारिस होते रहने की स्थिति में गूलर सड़ जाता है। मैकोजेब 75 डब्लूपी + क्लोरो थैलोनिल 70 डब्लूपी प्रत्येक 2 ग्राम पाउडर प्रति लीटर पानी की दर से ले कर फसल पर छिड़काव करें। अच्छा पराभव लाने के लिए सिल्वेट 99 के 10 ग्राम या 10 ग्राम ट्राइटन 50 मिली 100 लीटर पानी की दर से मिलाएं।

एल्टरनेरिया अंगमारी : मेंकोजेब 25 ग्राम प्रति लीटर पानी की दर से फसल पर आवश्यकतानुसार छिड़काव क्रेन।

माइरोथेसियम पत्ती धब्बा रोग और जीवाणु झुलसा: स्टेप्टोसाइक्लीन सल्फेट (15-20 ग्रा./हे.) + कापरआक्सीक्लोराइड (1500-2000 ग्रा./हे.) 200-250 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

खरपतवार प्रबंधन:

छोटे खरपटवारों पर खरपतवारनाशक अधिक प्रभावी होते हैं।

खरपतवार उगने के बाद प्रयोग में आने वाले खरपतवारनाशक(50 से 75 ग्रा. सक्रिय तत्व प्रति है. की दर से)

घासों : क्वीजेलोपोफ- इथाइल या फेनोक्सप्रोप-इथाइल या फ्लूएजीफोप-ब्यूटाइल का छिड़काव।

नरकर और घासों: प्रोपेक्विजाफोप-इथाइल का छिड़काव करें।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: पाइरोथियोबेक सोडियम का छिड़काव करें।

खरपटवारों उगने पर खरपतवारनाशकों से उनका समयबद्ध एवं प्रभावी नियंत्रण होता है। खरपतवारनाशी (हर्बीसाइड) नवजात खरपटवारों (10-15 दिनों आयु से कम) पर अधिक प्रभावी एवं कारगर होते हैं। घाँसकुल के खरपटवारों के नियंत्रण के लिए क्लोजईलोफोप-इथाइल, फेनोक्सप्रोप सोडियम, फ्लुयाजीफोप ब्यूटाइल, का प्रयोग कर सकते हैं। नरकर और घासों के लिए पायरिथोबेक इथाइल हैं और चौड़ी पत्तीवाले खरपटवारों के लिए पायरीओथिबेक सोडियम कारगर है। अधिक जानकारी के लिए कृषि विश्वविद्यालयों ए तकनीकी विशेषज्ञों से विचार विमर्श कर सकते हैं।

जलजमाव (वाटर लागिंग)

प्रबंधन:

जलमग्नता प्रबंधन:

कपास की फसल अधिक पानी के लिए संवेदनशील है अधिक वर्षा के कारण देश के मध्य और दक्षिणी क्षेत्रों में जल मग्नता एक समस्या बन सकती है। गहरी काली मृदाओं और पानी की अच्छी निकासी न होने की स्थिति में कपास की फसल जल जमाव से सबसे ज्यादा दुष्प्रभावित होती है। अधिक वर्षा वाली परिस्थितियों में पानी की निकासी के लिए विशेषतः काली मिट्टी वाली खेत में ढलान के साथ साथ पर्याप्त नालियाँ बनाए। बेहतर मृदा नमी संरक्षण के लिए विशेषतः जिन क्षेत्रों में मिमी वर्षा होती है उन क्षेत्रों में मेढ़ मेढ़ बनाने वाले यंत्र या 900-700 रिजर की सहायता से मेढ़व नाली बनाए। इस तकनीक और मेढ़ों पर कपास की बुवाई करने से वर्षा जल का संरक्षण होगा और अतिरिक्त जल खेत से बाहर निकाल जाएगा। यह तकनीक भारी काली मिट्टी में और अधिक वर्षा वाले क्षेत्र में उपयुक्त है।

खेत के किनारों पर जल निकासी के लिए नालियाँ बनाए। इससे अतिरिक्त पानी खेत से बाहर निकल सकेगा। नाली-मेढ़ पद्धति (रिजेज़) में मेढ़ के ऊपर तुरंत बुवाई करने की सिफारिस की जाती है। इस पद्धति के उपयोग से भारी वर्षा का फसल पर दुष्प्रभाव नहीं होगा। जलमग्नता से यदि फसल पीली पड़ जाए तो उर्वरकों का अनुप्रयोग करें। यदि भारी वर्षा की भविष्यवाणी की

गई है तो उर्वरकों का अनुप्रयोग टाल दें जिससे सतह पर से उर्वरक बह जाने वाले नुकसान से बचा जा सके।

जलमग्नता के दुष्प्रभाव से फसल को जल्दी उबारने के लिए साप्ताहिक अंतराल में फसल पर 0.5 से 1.0 % डीपीए अथवा 19:19:19: नाइट्रोजन का घुलनशील योग छिड़काव करें।

सामान्य फसल स्वस्थ प्रबंधन :

1) स्थूल व सूक्ष्मपोषकतत्वों का प्रबंधन बेहतर करें।

मेग्नेशियम सल्फेट %0.5, यूरिया %2का फसल पर छिड़काव करें। इसके बाद %2डीपीए का छिड़काव क्राय-1 एसी की उचित अभिव्यक्ति तथा लालपती रोग में कमी लाना सुनिश्चित करने के लिए इनका फसल पर छिड़काव करें। मुरझान रोग की प्रारम्भिक अवस्था में तुरंत 1 % कोबाल्ट क्लोराइड का छिड़काव तथा बाबिस्टीन 1 % घोल से पौधों की जड़ के पास की जमीन को तर करने से क्षति पूर्ति हो सकती है।

2) लालपती की रोक थाम के लिए 2 % यूरिया, 0.5 % जिंक सल्फेट तथा 2% बोरान का 15 दिनों के अंतराल में छिड़काव फसल के 90 दिनों के होने पर करें।

3) कली और फूलों के धारण के लिए: प्लानोफिक्स 4.5 एसएल (एनएए) हार्मोन @ 21 पीपीएम (7 एमएल प्रति 15 लीटर पानी की दर से फसल पर छिड़काव करें।

साप्ताहिक सलाहकार संयोजक टीम:

वैज्ञानिक	पता		
डॉ. के.आर. क्रांति	निदेशक,केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. ए. एच. प्रकाश	प्रधान वैज्ञानिक,एवं प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)		
डॉ. डी. मोंगा	प्रधान सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,सिरसा (हरियाणा)		
डॉ एस. बी. सिंह	प्रधान, फसल सुधार विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. संध्या क्रांति	प्रधान, फसल संरक्षण विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. ब्लेज़ डी-सूजा	प्रधान, फसल उत्पादन विभाग, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
डॉ. इसाबेला अग्रवाल	वरिष्ठ वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)		
श्री एम.सबेस	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र,कोयंबटूर (तमिलनाडु)		
डॉ. एन अनुराधा	वैज्ञानिक, सीआईसीआर, केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)		
प्रभारी वैज्ञानिक, मौसम विज्ञान विभाग (एआईसीएसटीआईपी केंद्र)			
वैज्ञानिक		मोबाइल नं.	ईमेल
डॉ. पंकज राठोर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	09464051995	pankaj@pau.edu
डॉ. (श्रीमति) सुनीत पंधर	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, फरीदकोट (पंजाब)	009814513681	suneet@pau.edu
डॉ. संजीव कुमार कटारिया	पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, आरआरएस, भटिंडा (पंजाब)		k.sanjeev@pau.edu
डॉ. जगदीश बेनीवाल	सीसीएस-हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय,	09416325420	cotton@hau.ernet.in

	हिसार-124004 (हरियाणा)		
डॉ. ऋषिकुमार	सीआईसीआर, क्षेत्रीय केंद्र, सिरसा (हरियाणा)	09729106299	Rishipareek70@yahoo.in
डॉ. रूप सिंह मीना	स्वामी केशवानन्द राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर, राजस्थान	09413024080	rsmeenars@gmail.com
डॉ. बी.एस. नायक	उड़ीसा-कृषि एवं तकनीकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर-751003 (उड़ीसा)	09437321675	bsnayak2007@rediffmail.com
डॉ. गोफाल्डू	नवासारी कृषि विश्वविद्यालय, नवासारी-396450 (गुजरात)	09662532645	girishfaldu@rediffmail.com
डॉ. ऐ. एन. पसलवार	पंजाब राव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला-440104 (महाराष्ट्र)	09822220272	adinathpaslawar@rediffmail.com
अरविंद डी. पंडागले	मराठवाडा कृषि विद्यापीठ, नांदेड (महाराष्ट्र)	07588581713	arvindpandegale@yahoo.co.in
डॉ. सतीश परसाई	आर.वी.एस. कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर-472002 (म.प्र.)	09406677601	aiccipkhandwa@gmail.com
डॉ. एस. भारती	आचार्य एन जी रंगा कृषि विश्वविद्यालय, एलएएम गुंटूर (आंध्रप्रदेश)	0949072341	bharathi_says@yahoo.com
डॉ. अलादिकट्टी	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09448861040	yaladakatti@rediffmail.com
डॉ. एम. वाय. अजयकुमार	धारवाड़ कृषि विश्वविद्यालय, धारवाड़ (कर्नाटक)	09880398690	dr.my.ajay@gmail.com
डॉ. एस. सोमासुंदरम	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय कोयंबटूर (तमिलनाडु)	09965948419	rainfed@yahoo.com
डॉ. एम. गुनसेकरण	तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कपास अनुसंधान संस्थान, श्रीविल्लीपुथुर (तमिलनाडु)	09443631359	gunasekaran.pbg@gmail.com

हिन्दी संस्करण:

डॉ. उल्हास नन्दनकर,
मुख्य तकनीकी अधिकारी एवं
प्रभारी, हिन्दी अनुभाग,
केकअनुसं, नागपुर (महाराष्ट्र)
uanandankar@gmail.com